ओम् शान्ति।

13-10-02

मन्सा सेवा द्वारा विश्व की आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो

आज विशेष अपनी प्यारी दादी जानकी की याद और सर्व डबल विदेशी बच्चों की यादप्यार और समाचार लेते हुए वतन में पहुंची। दूर से दृष्टि द्वारा परमात्म प्यार अनुभव करते सम्मुख पहुंच गई। बापदादा मिलन मनाते बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो? आज मेरे डबल विदेशी बच्चों का समाचार लाई हो? बापदादा तो हर बच्चे की विशेषता की माला जपते रहते हैं, गीत गाते रहते हैं - ''वाह मेरे डबल विदेशी बच्चे वाह!'' ऐसे कहते ही कुछ समय के लिए जैसे बापदादा के सामने सर्व डबल विदेशी बच्चे दिल की टी.वी. में इमर्ज थे और बापदादा बच्चों के प्रेम में समाये हुए थे। बोलो, आप सब भी परमात्म प्यार की लहरों में समा गये हो ना। कुछ समय बाद बाबा को चारों ओर का समाचार सुनाया, दादी जानकी के उमंग सुनाये। बाबा बोले, आजकल जनक बच्ची को बहुत बड़े हिम्मत के पंख लगे हुए हैं। एक तरफ रहमदिल, दूसरे तरफ मास्टर दाता इन पंखों से उड़ती रहती है और साथ-साथ साथियों को भी छोड़ती नहीं, उन्हों को भी उड़ाती रहती। लेकिन बापदादा जानते हैं कि साथी साथ देने में भी कम नहीं हैं। हिम्मत से साथ निभाने वाले हैं, हर बच्चा सर्विसएबुल, बापदादा के दिलपसन्द रत्न है और सेवा की रिजल्ट में सफलता की रिजल्ट भी अच्छी है। बापदादा तो हर बच्चे की सेवा देख दिल के स्नेह की मुबारक देते हैं।

उसके बाद बापदादा बोले, बच्ची अब समय की समीपता प्रमाण फास्ट पुरुषार्थ, फास्ट सेवा का समय है। इसलिए बापदादा ने फास्ट गति की सेवा चलते फिरते समय निकाल मन्सा सेवा द्वारा विश्व की आत्माओं को सुख-

शान्ति की अंचली देने की विधि का सहज साधन बताया है। इसमें स्व पुरुषार्थ की सफलता और सेवा दोनों समाया हुआ है और इससे मन की सर्व समस्यायें भी समाप्त हो जाती हैं। इसमें सर्व बच्चों को रेस कर आगे बढ़ना है क्योंकि सहज भी है और सफलता भी है। अनेक बातों से सेफ्टी का साधन भी है। मन्सा बिज़ी रहने से वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध, सम्पर्क पर सहज ही प्रभाव पड़ जाता है।

उसके बाद बाबा ने लण्डन के डायमण्ड हाउस को याद किया और बोले, सब बच्चे बड़े उमंग-उत्साह से अपना सहयोग दे आगे बढ़ा रहे हैं। ड्रामा में आदि से यह भावी बनी हुई है। अब तक चाहे फारेन में, चाहे भारत में जो भी सेवा के स्थान बने हैं वह सर्व की शुभ भावना, सेवा की भावना से सम्पन्न होते रहे हैं और होने ही हैं क्योंकि निमित्त बने हुए बच्चे सदा सफल करने में होशियार हैं, इसलिए सफलता है ही। उसके बाद बाबा ने विशेष यू.के. और यूरोप वाले बच्चों को याद किया और कहा बच्चे राज़युक्त, स्नेहयुक्त, सहयोग युक्त हैं। और बहुत-बहुत हर एक को याद दी। विशेष लण्डन के सेवा की मीटिंग वालों को प्यार दिया।

उसके बाद बाबा ने मोहिनी बहन (न्युयार्क) को बहुत प्यार भरी दृष्टि से यादप्यार दी और कहा बच्ची ने अपनी हिम्मत और दृढ़ता से, याद के बल से बहुत सहज सफलता पूर्वक शरीर का हिसाब सम्पन्न किया और सर्व बच्चों की शुभ भावना, शुभ कामनाओं का सहयोग भी अच्छा प्राप्त हुआ। साथ में मोहनी बहन के सर्विस साथियों को भी बाबा ने सेवा की मुबारक दी। और बाद में सर्व डबल विदेशी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद दी, सच तो दिलाराम बाप ने याद में सर्व को अपने दिल में समा लिया और बोले, मीठे बच्चे समय प्रमाण स्वयं को सदा तीव्रगति से आगे बढ़ाते चलो, सर्व को अंचली देते रहो। ओम् शान्ति।